GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

प्रेम काव्य के रूप में विद्यापति की पदावली

नीतु कुमारी
शोधार्थी, हिंदी विभाग
पूर्णिया ,तिलकामांझीभागलपपुर विश्वविद्यालय

बीज शब्द -प्रेम काव्य, पदावली, स्वच्छंद कवि,अलौकिक प्रेम, प्रकृति प्रेम, मुग्धा नायिका, वयःसंधि, गीति-परंपरा, हिंदी साहित्येतिहास में अभिनव जयदेव की उपाधि से विभूषित कवि

विद्यापति का समय-(1350-1450ई) है।हिंदी साहित्येतिहास का यह समय संधि काल कहलाता है, जब आदिकाल का अवसान और भक्तिकाल का उदय हो रहा था।मैथिल- कोकिल कवि विद्यापति का जन्म बिहार प्रांत के दरभंगा जिले के विपसी नामक गाँव में हुआ था।उनकेगुरु पंडित हरि मिश्र थे।वे तिरहुत के राजा शिव सिंह के समकालीन थे।संस्कृत, अवहट्ट, मैथिली, बांगला और हिंदी साहित्य में समान रूप से प्रतिष्ठित कवि विद्यापति की पदावली प्रेम, सौंदर्य और गेयता के लिए लोकप्रिय रचना है। शैव धर्म उपासककवि विद्यापति की पदावली गेय काव्य की अन्यतम कृति है। पदावली की गेयता, मधुरता और मादकता के कारण ही वेमैथिल-कोकिल कवि कहलाए। उनके अधिकतर पद श्रृंगार के ही हैं, जिसमें नायक-नायिका राधा-कृष्ण हैं।

कृष्ण-भक्ति की गीति-परंपरा के प्रवर्तक कवि विद्यापति की पदावली प्रेम काव्य की अन्यतम कृति है। पदावली का प्रेम राधा-कृष्ण के प्रेम रूप में मानवीय प्रेम भाव की विभिन्न स्थितियों, भावदशाओं और मनोभावों का वृहद व्याख्यान प्रस्तुत करता है। प्रेम काव्य के रूप में विद्यापति की पदावली पाठक के मन मस्तिष्क में एक गहन छाप छोड़ जाता है।विद्यापति की पदावली में प्रेम का अत्यंत सूक्ष्म और मार्मिक चित्रण हुआ है। नायककृष्ण और नायिकाराधा केअनंत प्रेम, निश्छल प्रेम, पारलौकिक प्रेम की गहन अनुभूति विद्यापति की पदावली के पदों में दिखाई

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

पड़ती है। विद्यापति ने राधा-कृष्ण के प्रेम को एक सामान्य मनुष्य के प्रेम के रूप में चित्रित किया है। यहां प्रेम का स्वरूप अटूट है लेकिन प्रेम का मार्मिक चित्रण स्वार्थ से परे उच्चतम मानवीय संवेदना का स्वरूप है। विद्यापति की पदावली में प्रेम के विभिन्न आयाम उभरकर सामने आया है। उन्होंने प्रेम की उच्चतम गहराई का चित्रण बेबाकी से किया गया है। पदावली के प्रेम का सौंदर्य उसकी नैसर्गिकता, सहजता, गेयता, भावप्रणवता में है।

सौंदर्य के कवि - विद्यापति सौंदर्य के कवि हैं। उन्होंने नायिका के वयःसंधि के शारीरिक एवं मनोवैज्ञानिक सौंदर्य का मनोहारी चित्रण किया है। जब विद्यापतिकी नायिका सैसव से यौवन की दहलीज पर कदम रखती है, तब उसमें रूप और गुण के स्तर पर क्या परिवर्तन होता है, उसका चित्रण करते हैं तो पाठक के समक्ष पद की चित्रात्मक छवि उभर आती है। कवि लिखते हैं- " उरज-उदयधललालीमदेल, चंचल चरन चित चंचल भान" कवि किशोरी के चरण की चंचलता और चित्त की चंचलता को काव्य-संदेश के रूप में प्रेषित करते हैं। यहाँ शरीर और मन में आए बदलाव को देखा जा सकता है। फिर स्त्री मनोविज्ञान को दर्शाते कवि विद्यापति लिखते हैं- " कबहुबाँधेय कच कबहुविथारि, कबहुझाँपय अंग कबहुउघारि" विद्यापति के पदावली में नायिका के दिन-दिन विकसित होते शारीरिक सौंदर्य और मानसिक गतिशीलता का मनोवैज्ञानिक एवं मनोहारी चित्रण किया है। कवि विद्यापति स्त्री-सौंदर्य और उसके रूप लावण्य को पदावली के अनेक पदों में दर्शाया है। कवि लिखते हैं- " पीन पयोधर दुबरिगात। " कवि ने सौंदर्य चित्रण में प्रकृति और जीव मंडल से अनेक उपमाओं का चयन और उपयोग किया है।

प्रकृति प्रेम - प्रकृति हमेशा कविता के साथ रही है। प्रकृति केवल काव्य-उत्प्रेणा का काम नहीं करती है, बल्कि यह सौंदर्य का साधन भी है। संस्कृत काव्य परंपरा से अक्षुण्ण संबंध रखने वाले कवि विद्यापति ने गीत-गोविंद के रचनाकार जयदेव की गीति परंपरा में अपनी पदावली की रचना की है। स्वभावतः संस्कृत काव्य के प्रकृति प्रेम को उन्होंने और निखार देते हुए अपने

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

काव्य में महत्वपूर्ण स्थान दिया है। उनके काव्य में नंदक कानन, कदम्बतरू, जमुना का तीर, गोचारण, गोधूली, कमल, हिरण, कोयल सहित प्रकृति के चर-अचर रूप स्थान पाया है। विद्यापति ने प्रकृति को अपनी काव्य संगिनी बनाया है। काव्य की स्थिति और काव्य के नायक-नायिका की मनोदशा के चित्रण में विद्यापति ने प्रकृति को अपने काव्य में समेटा है। लोचन चकित चकोर, नाभि बिवरसयं लोम-लतावलि, नासा-खगपति-चचु भरम-भय, हरिन-हीन हिमधामा, सरीखे अनेक पदबंध विद्यापति पदावली में मिल जाएंगे, जो काव्य को प्रकृति के करीब करती नजर आती है। पदावली में विद्यापति का प्रकृति के प्रति प्रेम की अनुपम अभिव्यक्ति हुई है।

स्त्री-पुरुष प्रेम का चित्रण- (राधा-कृष्ण के रूप में) विद्यापति के पदावली में स्त्री-पुरुष के प्रेम का व्यापक, विशद और मनोवैज्ञानिक चित्रण मिलता है। एक पुरुष की नजर में स्त्री की छवि, स्त्री संसर्ग से उभरते पुरुष-मनोभाव, स्त्री के विभिन्न कार्यव्यापार, सभी संचारी भावों का चित्रण आदि विद्यापति-पदावली की काव्य विशेषता है।

विद्यापति के पदावली में स्त्री-पुरुष प्रेम की नैसर्गिक अभिव्यक्ति हुई है। प्रेम एक ऐसी भाव-दशा है, जिसमें स्त्री-पुरुष की सामान्य स्थिति में मनोवैज्ञानिक बदलाव परिलक्षित होता है। कवि विद्यापति ने नायक-नायिका के संचारी भावों को दर्शाया है, जिससे पाठक तक उसकी पहुँच सुगम हो जाती है।

प्रेम के क्षेत्र में विद्यापति पूर्णत: स्वच्छंद कवि के रूप में दिखाई पड़ते हैं। उनका प्रेम कुल की प्रतिष्ठा, परिजनों का भय, समाज के बंधनों एवं धर्म के नियमों को ठुकराता हुआ निर्बाध रूप से आगे बढ़ता है।कृष्ण की बाँसुरी की आवाज से राधा प्रेम में इस कदर विभोर है कि कवि लिखते हैं- "बिगलित तन-मन लाज।" स्वच्छंद प्रेम की उत्पत्ति प्रायः प्रथम दर्शन से ही होती है।नायिका जब नायक का प्रथम दर्शन करती है तो अपने कौतुहुल को रोक नहीं पाती है।कवि

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

विद्यापति कहते हैं- पथ-गति नयन मिलल राधा कान। आँखों का मिलन प्रेम भाव में बदल जाता है। दोनों एक-दूसरे को देखकर भाव विभोर हो जाते हैँ। कवि लिखते हैं कि समय न बूझए अचतुर चोर। जिस तरह अचतुर चोर को समय का सही ज्ञान नहीं रहता है, उसी तरह प्रेमी युगल को समय का भान नहीं रह जाता है। समय-शून्यता की यह स्थिति ही पेम की तल्लीनता है।प्रेमी एक-दूसरे को निहार-निहार कर थकते नहीं हैं। कवि कहते हैं- 'हेरि-हेरि न पुरलआसा।'नायिका ने निमिष मात्र में नायक का दर्शन किया तो उसका मन-मृग काम के विषम वाण से बिंध जाता है। मुरली के धुन ने राधा का मन मोह लिया। यहाँ प्रेम अपने प्रथम दर्शन से ही मनमोहक है।मन का मोहित हो जाना ही प्रेम की पहली सीढ़ी है।

प्रेम राधा को पुलक से भर देता है। यह पुलक ही नायिका को प्रेमपूर्ण भावों से भर देती है। नायिका अपने प्रिय से नयन चुराती है। वह अपने प्रेम को गोपित रखना चाहती है। वह नहीं चाहती है कि कोई उसे अपने प्रिय को निहारती हुई देख ले। वह लोक लाज के कारण भी अपने प्रेम को गुरु जन से गोपित रखना चाहती है। कवि लिखते हैं- "गुरु-जन समुखहि भाव-तरंग।" लेकिन प्रेम एक ऐसा भाव तरंग है, जिसे लाख छुपाओ, वह प्रकट हो ही जाता है। वह उसके हाव-भाव-भंगिमा में प्रकट होता रहता है। तन-मन की विवशता, नजरें चुराना,निबि-बंध का नीचे खिसकना प्रेम की अवस्था में होना है।

'जनम अबधि हम रुप निहारल नयन न तिरपित भेल।' प्रेम की अवस्था में अपने प्रिय को निहारना बड़ा रूचिकर लगता है। नयन न तिरपित भेल जैसे पदबंध विद्यापति को प्रेम काव्य में अमरता प्रदान करता है। प्रेम का आस्वाद ऐसा है कि उसे जितना पाया जाए तृप्ति की चाहत बरकरार रहती है। कवि लिखते हैं- 'लाख-लाख जुग हिअहिअराखल, तइओहिअजरनि न गेल।' यह जो तड़प है, वही प्रेम का प्रमाण है। अपने प्रिय को हर पल देखने, उसे दिल में बसा

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

कर रखने की ललक ही प्रेम है। प्रिय-हित की चाहत और हित-प्रयास ही प्रेम है। कवि विद्यापति ने राधा-कृष्ण के मानवीय प्रेम के विभिन्न स्वरूपों का चित्रण किया है।

प्रेम में धैर्यता- स्वच्छंदता के लिए अपेक्षित एक अन्य तत्व साहस का भी अस्तित्व विद्यापति की भावना में दृष्टिगोचर होता है।वस्तुत: विद्यापति की नायिकाएं प्रत्येक परिस्थिति और अवस्था में अपने प्रेम पर दृढ़ रहकर अपने अपूर्व साहस का परिचय देती हैं।

विद्यापति के श्रृंगार पदों में इस स्वच्छंद प्रणय के अतिरिक्त दांपत्य का भी चित्रण गौण रूप में हुआ है, जिसमें प्रथम समागम से लेकर पति के विदेश गमन तक के प्रसंगों का चित्रण अनुभूतिपूर्ण शब्दों में हुआ है। यहां नायिका प्रेमिका ना होकर पत्नी है।

विद्यापति की पदावली में वर्णित प्रेम का स्वरूप कुछ इस तरह से देखने को मिलता है -

1. वियोग का चित्रण 2. प्रकृति प्रेम 3. स्त्री-पुरुष प्रेम (राधा-कृष्ण के रूप में) चित्रण

4. लोक संस्कृति प्रेम का प्रभाव का चित्रण 5. प्रेम में धैर्यता को दिखाया गया है।

6. सौंदर्य संरचना प्रेम का चित्रण ।7. अलौकिक प्रेम का चित्रण।

8. निश्छल प्रेम का चित्रण ।9. पुकार प्रेम चित्रण।

संयोग श्रृंगार:विद्यापति ने राधा-कृष्ण के मिलन के क्षणों का सुंदर वर्णन किया है, जिसमें उनकी शारीरिक निकटता और प्रेम की अनुभूति का वर्णन है।कवि ने प्रेम के विभिन्न पहलुओं को उजागर किया है, जैसे कि पहली मुलाकात, प्रेम में तकरारऔर शारीरिक आनंद।उन्होंने राधा-कृष्ण के प्रेम को एक अलौकिक प्रेम के रूप में चित्रित किया है, जिसमें वे सांसारिक प्रेम की सीमाओं से परे हैं। कवि ने राधा-कृष्ण के प्रेम को एक प्रतीकात्मक रूप में भी प्रस्तुत किया है, जो मनुष्य की आत्मा और परमात्मा के मिलन का प्रतीक है। विद्यापति ने प्रेम के विभिन्न पहलुओं को उजागर करते हुए, उसे एक जटिल और सुंदर अनुभव के रूप में प्रस्तुत किया है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

वियोग श्रृंगार:विद्यापति ने राधा-कृष्ण के विरह की पीड़ा को भी बहुत ही मार्मिक ढंग से व्यक्त किया है। विरह की स्थिति में राधा की मनोदशा, उनकी बेचैनी और कृष्ण को पाने की तड़प का वर्णन कवि ने अत्यंत प्रभावशाली ढंग से किया है। कवि ने प्रकृति के माध्यम से भी विरह की पीड़ा को व्यक्त किया है, जैसे कि बारिश और अंधेरी रात में राधा की मनोदशा। इसके अलावा विद्यापति ने प्रेम को एक सार्वभौमिक भावना के रूप में चित्रित किया है, जो सभी मनुष्यों पर लागू होती है। उनके पदों में प्रेम की गहराई, तीव्रता और विरह की पीड़ा का वर्णन है, जो पाठक को भावुक कर देता है।

विरह की व्याकुलता को दर्शाते हुए कवि विद्यापति नायिका की भाषा में कहते हैं- जब से कान्हा गोकुल छोड़कर मधुपुर जा बसे हैं, तब से विरह का यह दर्द हृदय सहन नहीं कर पा रहा है। मेरे मन में तो हरि बसे हुए हैं। लेकिन सावन मास में प्रिय के बिना इस घर में अकेले रहने की पीड़ा बड़ा दुखदायी है। कवि लिखते हैं- 'एकसरि भवन पिआबिनु रे मोहिरहलो न जाए।' सावन मास की रिमझिम फुहार, मन में बसे कान्हा गोकुल छोड़ मधुपुर जा बसे हैं। घर में पिया के बिना नायिका की विरह व्यथा का वर्णन विद्यापति पदावली की विशेषता है। विरह काव्य-परंपरा में कवि विद्यापति महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। नायक-नायिका की विभिन्न विरह दशाओं के चित्रण में विद्यापति को बेहतर सफलता मिली है। अपने प्रिय से दूर होने की पीड़ा में विद्यापति की नायिका अनेक पदबंध प्रस्तुत करती हैं। कवि लिखते हैं- माधव जनुजाहविदेस। विद्यापति की नायिका अपने प्रिय को अपने पास रखना चाहती है, क्योंकि वह उसे अपनी हँसी-खुशी का खजाना मानती है। इस तरह कवि विद्यापति ने स्त्री-पुरुष संबंधों के बहुआयामी स्वरूप का दर्शन कराया है।

कवि विद्यापति नारी सौंदर्य का दर्शन कराते हुए पुरुष मन में कामदेव के उदय की सूचना देते हैं। गोरे अंग पर नीले वस्त्र मेंमुक्ता पाँति वाले अधरों से मन्द-मन्द मुस्कान करती हुई स्त्री

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

को देखकर पुरुष मन में कामदेव का उदय होता है। रूपवती स्त्री के तन की सुन्दरता का चित्रण करते हुए कवि कहते हैं स्त्री जब अपने स्तन से आधा आँचल सरका देती है - 'तबधरिदगधेअनंग।'कवि विद्यापति रूप गर्विता नारी के संबंध में लिखते हैं- "सुपुरूखबिलसय से बरनारि।"

कवि विद्यापति की पदावली नायक-नायिका के सौंदर्य वर्णन और तद्जनित काम भाव की उत्प्रेरणा का दर्शन कराती है। स्त्री-पुरुष के आकर्षण से उत्पन्न कामदेव की अराधना ही कवि का उद्देश्य है। संधि काल के कवि विद्यापति के काव्य में रीतिकालीन भाव-बोध की अभिव्यक्ति उसी प्रकार मिलती है, जिस प्रकार भक्ति-भाव की अभिव्यक्ति।बच्चन सिंह विद्यापति को हिंदी में राधा-कृष्ण विषयक श्रृंगारी काव्य के जन्मदाता मानते हैं। विद्यापति एक दरबारी कवि थे। उनके प्रत्येक पद में दरबारी वातावरण की छाप दिखाई देती है। पदावली में कृष्ण के कामी स्वरूप को चित्रित किया गया है। उन्होंने राधा का वर्णन मुग्धा नायिका के रूप में किया है।डॉ नगेंद्र लिखते हैं- "पदावली में कृष्ण की उद्दाम काम-वासनाओं से प्रेरित राधा का रूप देखने को मिलता है।" (1)प्रेम की अभिव्यक्ति काम-भाव तक सीमित नहीं है। यह जीवन के हरेक क्षेत्र में दृष्टिगत होता है। प्रेम एक ऐसा भाव है, जो जीवन और जगत को अपनत्व भरी दृष्ट प्रदान करता है। प्रेम बेशक स्त्री-पुरुष के भीतर काम-भाव को जन्म देता है, लेकिन यह इससे अधिक मनुष्य को जवाबदेह बनाता है। विद्यापति ने प्रेम के विभिन्न प्रभावों और प्रक्रियाओं का चित्रण किया हो ऐसा नहीं दिखता है। रूप सौंदर्य के अलावा गुण सौंदर्य और कर्म सौंदर्य भी प्रेम प्रवाह को प्रभावित करता है।डॉ हरीश चंद्र वर्मा लिखते हैं- "विद्यापति की कविता श्रृंगार और विलास की वस्तु है, उपासना और साधना उनका उद्देश्य नहीं है।" (2) विद्यापति ने प्रेम के उदय, विकास और प्रभाव की विभिन्न विवृतियों की झलक दिखायी है।

GYANBODH
An International Multidisciplinary Peer Reviewed Journal
ISSN:3048-9792
Volume: 3
Issue: 4
July - August: 2026

संदर्भ -

(1)हिंदी साहित्य का इतिहास- आचार्य रामचंद्र शुक्ल -पृ-37

(2) - डॉ नगेंद्र -हिंदी साहित्य का इतिहास - पृ-112

(3) - डॉ हरीश चंद्र वर्मा - हिंदी साहित्य का आदिकाल -पृ- 42

(4)- कमलानंद झा द्वारा रचित पुस्तक 'विद्यापति: राजकाज और समाज'

(5)-रामवृक्ष बेनीपुरी- 'विद्यापति पदावली

-